अंकेक्षण एवं आश्वस्तीकरण मानक (SA)-300
अंकेक्षण में महत्वपूर्णता

प्रश्न–1 महत्वपूर्णता (मटेरियलिटी) से क्या आशय है?

उत्तर– अंकेक्षण मानक 300 के अनुसार किसी भी मद या सूचना को महत्वपूर्ण कहा जायेगा यदि उसका मिथ्याकथन वित्तीय विवरणों के उपयोगकर्ता के वित्तीय निर्णय को प्रभावित करता हैं। अर्थात वे मद या सूचनायें महत्वपूर्ण नहीं है। जिनके मिथ्याकथित होने पर भी उपयोगकर्ता प्रभावित न हों। महत्वपूर्ण होने के लिये बड्डी राशि का होना एक मात्र अनिवार्यता नहीं है। मिथ्याकथन के अंतर्गत महत्वपूर्ण तथ्यों का प्रकटीकरण नहीं होना भी शामिल होता है। जैसे किसी व्यवसाय में चालू व्यवसाय की अवधारणा का लग पाना असंभव है तो उसका प्रकटीकरण आवश्यक होगा जिसके अभाव में उपयोग कर्ता भ्रमित हो सकता है।

प्रश्न–2 मटेरियलिटी एवं आडिट रिस्क में क्या संबंध है?

उत्तर– अंकेक्षण मानक 300 के अनुसार मटेरियलिटी एवं आडिट रिस्क में विपरीत संबंध है। अर्थात मद या सूचना की महत्वपूर्णता जितनी अधिक होगी उसके मिथ्याकथित होते हुये पकड. में न आने की जोखिम उतनी कम होगी । चूँकि महत्वपूर्ण मदों के संदर्भ में अंकेक्षक अपनी गहन अंकेक्षण विधियों का उपयोग करता है अतः उनसे मिथ्याकथन के पकड. में न आने की संभावनायें नगण्य होती हैं । दूसरी ओर वे मद या सूचनायें जो छोटी राशि के होते है या कम महत्वपूर्ण होते हैं। उनमें मिथ्याकथन के होते हुये अंकेक्षक द्वारा नहीं पकड. पाने की संभावना अधिक होती है।

अंकेक्षक अपनी अंकेक्षण विधियों की गहनता , समय सीमा तथा प्रकृति निर्धारित करते समय मटेरियलिटी और आडिट रिस्क के इस संबंध पर विशेष ध्यान देता है।

सामान्यतः यदि अंकेक्षक कम मदों को महत्वपूर्ण मानता है तो वह इस बात से सहमत होता है कि ऐसा करने में आडिट रिस्क बढ. गयी है परन्तु वह इस आडिट रिस्क को कम कर सकता है। यदि वह :–

- आंतरिक नियंत्रणों पर विश्वास करने के लिये अतिरिक्त विधियॉ अपनाकर उसकी विश्वसनीयता के संदर्भ में अधिक अंकेक्षण साक्ष्य प्राप्त करे या नियंत्रणों पर विश्वास की सीमा कम करे या
- अपनी Substantive procedure की गहनता, समयसीमा में परिवर्तन कर Detection risk को कम करे

जब भी अंकेक्षक वित्तीय विवरणों पर अपनी राय व्यक्त करे, तो सभी ज्ञात समायोजित त्रुटियों के योग पर मटेरियलिटी एवं आडिट रिस्क के इस संबंध को उसे परखना चाहिये।

प्रश्न–3 मटेरियलिटी एवं आडिट रिस्क का यह संबंध अंकेक्षक के लिये किस तरह उपयोगी है।

उत्तर– अंकेक्षक मटेरियलिटी की पहचान राशि के कम या ज्यादा होने के साथ–साथ सूचना या मद की प्रकृति से भी करता है। सामान्यतः अंकेक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह यह संबंध निम्न स्थितियों में लागू करेगा–

- अपनी अंकेक्षण विधियों की समयसीमा, गहनता तथा प्रकृति के निर्धारण में
- मिथ्याकथनों के वित्तीय विवरण पर प्रभाव के मूल्यांकन के समय

अंकेक्षक की अंकेक्षण विधियॉ मटेरियलिटी लेवल पर निर्भर होती है। जो मद या सूचनायें मटेरियल मानी जाती है। उनके संदर्भ में अंकेक्षण विधियॉ ज्यादा गहन होती है।

ऐसा हो सकता है कि अंकेक्षण की शुरूआत में अंकेक्षण द्वारा निर्धारित मटेरियलिटी लेवल एवं अंकेक्षण के दौरान या अंत में मटेरियलिटी लेवल में भिन्नता हो। अंकेक्षक अपने मटेरियलिटी लेवल को अंकेक्षण के दौरान प्राप्त सूचनाओं से सूचनाओं को समायोजित करता रहता है। सामान्यतः अंकेक्षण की शुरूआत में मटेरियलिटी लेवल को कम रखकर अंकेक्षण जोखिम को नियंत्रित किया जाता है।

अंकेक्षक द्वारा मटेरियलिटी एवं आडिट रिस्क के संबंध का रिपोर्टिंग के समय भी ध्यान रखा जाता हैं। यदि असमायोजित त्रुटियों का योग मटेरियलिटी लेवल से अधिक हो जाता है तो अंकेक्षक प्रबंध से समायोजन की मॉग कर सकता है। यदि प्रबंध समायोजन से मना कर दे तो अंकेक्षक को ऐसी मनाही का अपनी अंकेक्षण रिपोर्ट पर पड.ने वाले प्रभाव का आंकलन करना चाहिये।यदि अंकेक्षक चाहे तो वह एक मर्यादित या विपरीत राय भी व्यक्त कर सकता है।